Volume-9, No. 1 Feb.-2022, pp. Hin.16-20

समाजिक मुद्दों के प्रति माध्यामिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

मिस. सपना शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
बीकॉन इंस्टीटयूट ऑफ टेक्नोलॉजी मेरठ उत्तर प्रदेश भारत।

सार–
प्रस्तुत शोध सामाजिक मुद्दे के प्रति माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन है। इस शोध में शोधकर्ता ने शोध के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुये परिकल्पना, सारिव्यकी प्रविधियों की सहायता से अपने शोध का तलनात्मक अध्ययन किया है। जिसमें छात्र–छात्राओं की संख्या को निर्धारित करते हुये मेरठ महानगर के विद्यालयों का अध्ययन किया है कला व विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्तियों का अध्ययन इसमें किया गया है जिसका परिणाम परिकल्पना की सार्थकता के द्वारा निर्धारित किया है सामाजिक मुद्दों को हल करने के लिये अध्यापक युवावर्ग व राजनैतिक दलों के साथ प्रत्येक व्यक्ति को आना होगा। हमारा देश भी इन सामाजिक मुद्दों के हल बिना सुचार रूप से प्रगति के पथ पर आगे नहीं बढ पा रहा है। प्रकृति की संरचना में मानव की रचना सर्वश्रेष्ठ है। उस मानव का विकास समाज में रहकर होता है मुनष्य एक सामाजिक प्राणी है उसने अपने स्वभाव व प्रकृति के कारण तथा अनके भौतिक एव मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति तथा स्वयं की सुरक्षा हेतु ही समाज की रचना की है। सामाजिक परम्परायें और मान्यताएँ जन्मजात योग्यता नहीं होती है। इन्हें तो बालक सामाजिक वातावरण में रहकर ही सीखता है। इस प्रकार प्रत्येक समाज ने धीरे धीरे अपनी संस्कृति, रीतिरीवाज, परम्पराओं तथा मान्यताओं आदि का विकास कर लिया है।

मुख्य शब्द– सामाजिक मुद्दे, शिक्षा, पर्यावरण, प्रदूषण, आतंकवाद, जनसंख्या

समाज के बाहर मनुष्य का कोई अस्तीत्व नहीं है। और मनुष्य के बिना समाज का कोई असतीत्व नहीं है। परस्पर दोनों एक इसरे पर निर्भर है। समाज में परिवर्तन के साथ–साथ इसके मूल्यों एचं रीति रीवाजों के समय के साथ परिवर्तन आते रहे है इन रीति रीवाजों के बदलते स्वरूप को ही नयी पीढी स्वीकार करती है इसके क्षेत्र मे विस्तार भी करती है। मनुष्य एक मनोशारीरिक प्राणी है। प्रत्येक मनुष्य की अपनी व्यक्तिगत समस्यायें होती हैं जो समाज के अधिकांश व्यक्तियों की समस्याओं से मिलती हैं जब कोई समस्या समाज के अधिकाश लोगों की भी समस्या होती है तो वह समस्या व्यक्तिगत न होकर सामाजिक बन जाती है उस समस्या का समाधान व्यक्ति अकेले न करके समाज के लोगों के साथ मिलकर करता है। सरकार समाज की प्रतिनिधित्व संस्था होती हैं जिसका निर्माण किसी समाज या राष्ट्र द्वारा उसके सुचारू रूप से संचालन तथा उसकी समस्याओं के समाधान के लिये किया जाता है।

इन सामाजिक समस्यओं को सामाजिक मुद्दों के नाम से पुकारा जाता है। सरकार इन मुद्दों को सुलझानें का प्रयत्न करती हैं लेकिन मुद्दे ऐसे होते है जो सदियों से भारतीय समाज में मौजूद है। इनके हल का प्रयत्न तो किया गया लेकिन वह अपर्याप्त था। इन्ही मुद्दों के कारण समाज की प्रगति नहीं हो पा रही है इन मुद्दों में पर्यावरण, शिक्षा, प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि भष्टाचार व आतंकवाद प्रमुख है।

आज समाज में मौजूद इन मुद्दों को हल करना नितान्त आवश्यक हो गया है। साथ ही इन मुद्दों के प्रति आम जन–मानस में चेतना जाग्रत करने की जरूरत है। ताकि जन–मानस प्रजातन्त्र सरकार को सोते से झकझोर दें। Because Democracy is the Government of the people by the people for the people शिक्षा इस चेतना को जाग्रत करने का अमोघ अस्त्र है लेकिन अपनी कुछ विसगतियों के कारण शिक्षा खुद ही एक मुद्दा बनती जा रही हैं इन दोषों के निराकरण के लिये शिक्षाविदों को तत्काल ही कदम उठाना चाहिये। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को सही मार्ग पर लाया जा सकता है और उसमें

सामाजिक मुद्दों के प्रति चेतना जाग्रत की जा सकती है। ताकि इन मुद्दों का हल हो सकें। समाज प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकें।

शोध की सार्थकता–

समाजिक परिवर्तन सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक है विश्व का कोई ऐसा समाज नहीं है जहाँ परिवर्तन न हुआ हो भिन्न समाजों में स्वरूप भिन्न हो सकता है। क्योंकि कोई भी दों समाज एक जैसे नहीं होते है। कभी–कभी सामाजिक परिवर्तन की दशा में एक समाज के सदस्यों की आवश्यकताएं तथा आकंक्षाए तो बदल जाती है लेकिन सामाजिक ढॉचें में इसके अनुरूप परिवर्तन नहीं हो पाता है। जिसके फलस्वरूप सामाजिक ढॉचे में कुछ ऐसे अवरोध उत्पन्न दो जाते है जो सम्पूर्ण सामाजिक संतुलन को बिगाड देते है समाजिक समायोजन में बाधा डालने वाली दशाओं अथवा सामाजिक जीवन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने वाली समाजिक दशाओं को ही हम सामाजिक मुद्दे कहते है।

शिक्षा जगत में काम करने वाले व्यक्तियों के समक्ष यह समस्या है कि वर्तमान सामाजिक मुद्दों के प्रति शिक्षा व शिक्षण कार्य किस प्रकार से किया जाये। वर्तमान सामाजिक मुद्दों को समझकर ही उनके हल के प्रयास किये जा सकते है इसी कारण प्रस्तुत शोध कार्य में सामाजिक मुद्दों के प्रति माध्यामिक स्तर के विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का तुलनात्क अध्ययन किया गया है।

विभिन्न सामाजिक मुद्दों से शिक्षा, पर्यावरण, प्रदूषण जनसंख्या वृद्धि, भ्रष्टाचार व आंतकवाद नामक 05 मुद्दों को शोध कार्य हेतु लिया गया है।

समस्यॉ कथन–

प्रस्तुत शोध में समाज में फैले विष के रूप विभिन्न सामाजिक मुद्दों में से केवल 5 मुद्दों (शिक्षा पर्यावरण प्रदूषण, भ्रष्टाचार, जनसंख्या वृद्धि, आतंकवाद) पर हाईस्कूल के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है।

शीर्षक–

'सामाजिक मुद्दों के प्रति माध्यामिक स्तर थे विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन'

समस्या के चरों का परिभाषीकरणः– सामाजिक मुद्दे का अर्थ जानने से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि मुद्दा क्या है मुद्दा वास्तव में एक प्रश्न है, एक समस्या अथवा एक अफवाह है जो किसी भी रूप में विवादस्पद बनाकर किसी एक व्यक्ति या समूह द्वारा फैला दिया जाता है। अतः यदि हम कहे कि सामाजिक मुद्दा राजनीति एवं जनसमूह के झगडों का वस्ताविक ईधन है तो अतिशयोक्ति न होगीं इस शोध कार्य में जो सामाजिक मुद्दे लिये गये है, वे निम्नलिखित है शिक्षा, पर्यावरण, जनसंख्या वृद्धि, भ्रष्टाचार, अंतकवाद।

अभिवृत्ति–

साधारणतः अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से हे जो किसी व्यक्ति वस्तु संस्था अथवा स्थिति के प्रति किसी विशेष प्रकार के व्यवहार को इंगित करता है अभिवृत्ति लैटिन भाषा के शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका शब्दिक अर्थ योग्यता या सुविधा है।

कलावर्ग– कला शिक्षा से आशय कला, ड्राइंग, पेटिंग मूर्तिकला और गहने के डिजाइन मिट्टी के बर्तनों पर आधाारित है यह सीखने का क्षेत्र है इस तरह के व्यवसायिक ग्रफिक घर के समान के रूप में और अधिक व्यवहारिक क्षेत्रों के लिये लागू बुनाई/कपडे/आदि/समकालीन विषयों में फोटोग्राफी विडियों फिल्म/डिजाइन कम्पूयूटर कला आदि शामिल है।

विज्ञान वर्ग– विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान सामग्री कुछ सामाजिक विज्ञान सामग्री कुछ सामाजिक विज्ञान और कुछ शिक्षण अध्यापन शामिल है विज्ञान की शिक्षा के लिये मानक शामिल विषय के भौतिक जीवन, पृथ्वी और अंतरिक्ष विज्ञान के है।

माध्यामिक स्तर– सामान्यतः वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में माध्यमिक स्तर का आशय कक्षा 9 से कक्षा 12 के विद्यालयों से है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. समाजिक मुद्दों के प्रति माध्यमिक स्तर थे कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. समाजिक मुद्दों के प्रति माध्यामिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की अभिवित्त का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. समाजिक मुद्दों के प्रति माध्यमिक स्तर के समस्त छात्र छात्रायों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. समाजिक मुद्दों के प्रति माध्यामिक स्तर के विज्ञान एवं कलावर्ग के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. समाजिक मुद्दों के प्रति माध्यामिक स्तर के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अतंर नहीं है।

2. समाजिक मुद्दों के प्रति माध्यामिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है
3. समाजिक मुद्दों के प्रति माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र छात्राओं की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. समाजिक मुद्दों के प्रति माध्यामिक स्तर के कलावर्ग के सभी विद्याथियों एवं विज्ञान वर्ग के सभी विद्यार्थी में सार्थक की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

जनसंख्या

शोध में जनसंख्या शब्द का अर्थ भिन्न होता है जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण ईकाइयों के निरीक्षण से होता है कुछ ईकाइयों का चयन करके न्यादर्श बनाया जाता है न्यादर्श की ईकाइयों के निरीक्षण तथा मापन में जनसंख्या की विशेषताओं के सम्बन्ध मे अनुमान लगाया जाता है प्रस्तुत शोध में मेरठ महानगर के माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने माध्यामिक स्तर के 100 छात्र/छात्राओं का अध्ययन किया है इनमें 25–25 छात्र कला/विज्ञान के तथा 25/25 छात्रायें कला व विज्ञान वर्ग की है

माध्यमिक स्तर

छात्र	छात्राऐं
50	50
25 कला वर्ग 25 विज्ञान वर्ग	25 कला वर्ग 25 विज्ञान वर्ग

शोध उपकरण– प्रस्तुत शोध में उपकरण प्रश्नावली, चिन्दांकन सूची, अनुसूची, अभिवृत्ति मापनी, निर्धारण मापनी,
अवलोकन, साक्षात्कार, मनोवैज्ञानिक परीक्षण को सम्मलित किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण विधि– शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध में परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया है।

1. मध्यमान (M) mean.
2. प्रमाणिक विचलन (S.D.)
3. क्रान्तिक अनुपातः "t" Valve
4. स्वतन्त्रता की कोटिः df

Table – 01

सामाजिक मुद्दों के प्रति माध्यमिक स्तर के कलावर्ग के छात्र/छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है

Group समूह	**No.** संख्या	**Mean** मध्यमान	**S.D.** मानक विचलन	**SEd** प्रमाणिक विचलन	**"t"** क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
कला वर्ग माध्यमिक स्तर	25	86.28	8.92	2.71	8.87	0.05 = 2.01
कलावर्ग की माध्यमिक स्तर के छात्र	25	64.24	9.86	2.01	8.87	0.05 = 2.01

उर्पयुक्त तालिका से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर की कला वर्ग की छात्राओं का सामाजिक मुद्दों के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 86.28 है जबकि कलावर्ग के छात्रों का सामाजिक मुद्दों के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 62.24 है तथा दोनों के अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मानक विचलन क्रमशः 8.92 तथा 9.86 है। कला वर्ग के छात्र–छात्राओं के अभिवृत्ति प्राप्तांकों की प्रमाणिक त्रुटि 2.71 क्रान्तिक अनुपात 8.87 है। df = 48 के सापेक्ष में 0.05 तथा t 0.05 स्तर पर t अनुपात का सारणी मान क्रमशः 2.01 तथा 2.68 है। अतः प्राप्त t = 8.87 का मान दोनों स्तर पर सार्थकता से अधिक है।

Table – 02

सामाजिक मुद्दों के प्रति माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Group समूह	**No.** संख्या	**Mean** मध्यमान	**S.D.** मानक विचलन	**SEd** प्रमाणिक विचलन	**"t"** क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
विज्ञान वर्ग की माध्यमिक की छात्राएं	25	68.64	8.03	2.04	1.88	0.05 = 2.01
विज्ञान माध्यमिक स्तर के छात्र	25	72.48	5.99	2.04	1.88	0.01 = 2.68

उपर्युक्त तालिका में विज्ञान वर्ग की छात्राओं का अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 68.64 है । विज्ञान वर्ग के छात्रों का प्राप्तांक मध्यमान 72.84 है। मानक विचलन 8.03 तथा 5.99 है। विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं का अभिवृत्ति प्राप्तांकों की त्रुटि 2.04 है। क्रान्तिक अनुपात 1.88 है। df = 48 के सापेक्ष ज 0.05 तथा t 0.01 स्तर पर t अनुपात का सारणी मान क्रमशः 2.01 तथा 2.68 है दोनों स्तर पर आंकड़ों "t" मान कम है । अतः यह स्वीकृत है।

Table – 03

सामाजिक मुद्दों के प्रति माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला वर्ग के सभी छात्र/छात्राओं की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

Group समूह	**No.** संख्या	**Mean** मध्यमान	**S.D.** मानक विचलन	**SEd** प्रमाणिक विचलन	**"t" (C.R)** क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर

विज्ञान एवं कला वर्ग की भी छात्राएं	50	77.58	12.17	2.19	4.68	0.01 = 2.58
विज्ञान एवं कला वर्ग के सभी छात्र	50	67.34	9.62	2.19	4.68	0.05 = 1.96

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर की सभी छात्राओं कला+विज्ञान वर्ग का सामाजिक मुद्दे के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 77.58 है जबकि सभी छात्रों (कला+विज्ञान) का सामाजिक मुद्दों के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 67.34 है तथा दोनों के अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मानक विचलन क्रमशः 12.17 तथा 6.92 है। सभी छात्र–छात्राओं (कला + विज्ञान) के अभिवृत्ति प्राप्तांकों की प्रमाणिक त्रुटि 2.19 क्रान्तिक अनुपात 4.68 है। जो दोनों स्तरों 0.05 = 1.96 तथा 0.01 = 2.58 पर अधिक है । अतः यह परिकल्पना निरस्त होती है ।

Table – 04

सामाजिक मुद्दों के माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के सभी विद्यार्थियों एवं विज्ञान वर्ग के सभी विद्यार्थी की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Group समूह	**No.** संख्या	**Mean** मध्यमान	**S.D.** मानक विचलन	**SEd** प्रमाणिक विचलन	**"t" (C.R)** क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
समस्त कला वर्ग विद्यार्थी (छात्र+छात्राएं)	50	74.34	15.28	2.39	1.57	0.01 = 2.58
विज्ञान एवं कला वर्ग के सभी छात्र	50	70.58	7.25	2.39	1.57	0.05 = 1.96

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों (छात्र+छात्राओं) का सामाजिक मुद्दे के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 74.34 है जबकि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों (छात्र+छात्राओं) का सामाजिक मुद्दे के प्रति अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मानक विचलन क्रमशः 15.28 तथा 7.25 है । सभी कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति प्राप्तांकों की प्रमाणिक त्रुटि 2.39 तथा क्रान्तिक अनुपात 1.57 है। मान 0.05 तथा 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.96 तथा 2.58 पर कम है। अतः हमारी परिकल्पना सार्थक होती है।

निष्कर्ष– सांख्यिकी विधियों का प्रयोग करने के पश्चात् शोधकर्ता ने परिणाम के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले ।

परिकल्पना प्रथम– सामाजिक मुद्दों के प्रति माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र–छात्रों का सामाजिक मुद्दों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

निष्कर्ष– माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र/छात्राओं का सामाजिक मुद्दों के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्त अंकों से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 8.87 को 0.01 स्तर पर सार्थकता के मान 2.68 से अधिक है । इसलिए दोनों के मध्य सामाजिक मुद्दों के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर पाया जाता है अतः यह परिणाम हमारी प्रथम परिकल्पना निरस्त होती है ।

परिकल्पना द्वितीय– सामाजिक मुद्दों के प्रति माध्यमिक स्तर थे विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

निष्कर्ष– माध्यमिक स्तर के विज्ञान के छात्र–छात्राओं का सामाजिक मुद्दे के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 1.88 हैं जो दोनों स्तर पर सार्थकता के मान से कम है। इस लिऐ दोनों में अन्तर नहीं पाया जाता है। अतः यह परिणाम हमारी द्वितीय शून्य परिकल्पना को स्वीकृत करता है।

परिकल्पना तृतीय : सामाजिक मुद्दों के प्रति माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला वर्ग के सभी छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है ।

निष्कर्ष– माध्यमिक स्तर के सभी (विज्ञान+कला वर्ग) छात्र–छात्राओं का सामाजिक मुद्दे के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तंकों से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 4.68 है जो 0.01 स्तर पर सार्थकता के मान 2.58 से अधिक है । इसलिऐ दोनों के मध्य सामाजिक मुद्दे के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर पाया जाता है। परिणामस्वरूप हमारी तीसरी परिकल्पना निरस्त होती है।

परिकल्पना चतुर्थ– सामाजिक मुद्दों के प्रति माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के सभी विद्यार्थी व विज्ञान वर्ग के सभी विद्यार्थी की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–

माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का सामाजिक मुद्दों के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 1.57 है। जो दोनों स्तरों पर सार्थकता के मान से कम है। इसलिऐ दोनों के मध्य सामाजिक मुद्दों के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। अतः यह हमारी चौथी शून्य परिकल्पना को स्वीकृत करता है

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. राय, पारसनाथ– अनुसंधान परिचय (2005) एच0 एन0 पब्लिकेशन्स आगरा ।

2. अग्निहोत्री रविन्द्र– आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्यायें एवं समाधान (1987) राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर ।
3. मासिक पत्रिका– प्रतियोगिता दर्पण–अतिरक्तांक 1998 ।
4. Buch M.B.– Second Survery of Research is Education (1972-78)
5. सारस्वत मालती एवं वाजपेयी एल. बी.– भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामाजिक समस्याऐं (आलोक प्रकाशन लखनऊ नवीन संस्करण ।
6. सिंह अरूण कुमार– उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान (1997) मोतीलाल बनारसी, बगलो रोड़ दिल्ली ।
7. कपिल एच. के.– अनुसंधान विधियां (विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा 1992) ।